मॉरीशस में हिन्दी की स्थिति
STATUS OF HINDI IN MAURITIUS

https://doi.org/10.5281/zenodo.7398124

(Alka Dhanpat, Mavrikiyada hindi tili)
डॉ अलका धनपत
वरिष्ठ प्राध्यापिका
हिन्दी विभाग
महात्मा गांधी संस्थान,मॉरीशस
Ph : +230 – 5490 0554
Mail: drdunputh@gmail.com

Annotatsiya: *Mavrikiyada hindi tilining rivojlanishi, hindi tilining ta'lim tizimida, mediada, badiiy adabiyotda qo'llanishi, Mavrikiyda hind halqining ko'pgina qismi istiqomat qilishi bois hind filmlari.qo'shiqlari hindi tili rivojida katta o'rin tutishi kbi masalalar haqida so'z yuritilgan.*

Kalit so'zlar*: badiiy adabiyot, oily ta'lim. Hind filmlari, ingliz koloniyasi, mustaqillik.*

हिन्दी की स्थिति को लेकर आज मॉरीशस देश की गणना उन देशों में होती है, जहाँ हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन पी०एच०डी स्तर तक निर्बाध हो रहा है । हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में भारत के बाद यदि किसी अन्य देश का नाम लिया जाता है तो वह मॉरीशस ही है । मॉरीशस में हुए ग्यारहवें विश्व हिन्दी सम्मेलन (2018) में मॉरीशसीय जनता का उत्साह तथा उनके साथ हिन्दी में बातचीत करते हुए, विदेशों से आए सभी हिन्दी प्रेमियों ने यह महसूस किया कि यहाँ हिन्दी से केवल प्रेम ही नहीं वरन् हिन्दी भाषा तथा संस्कृति को लोग जीते भी हैं ।

मॉरीशस के महात्मा गांधी संस्थान में अन्य कुछ भारतीय भाषाओं (तमिल, तेलुगु, भोजपुरी, मराठी,उर्दू) के साथ-साथ हिन्दी भाषा का भी अध्ययन-अध्यापन होता है । यहाँ छात्र डिप्लोमा, बी०ए पार्ट टाइम, बी०ए ऑनर्ज़ फ़ुल टाइम तथा एम०ए की भी शिक्षा प्राप्त करते हैं । हिन्दी प्रचारिणी सभा अपनी बैठकाओं में परिचय, प्रथमा, मध्यमा तथा उत्तमा की कक्षाएँ हर शनिवार/रविवार को लगाती है तथा आज उत्तमा उत्तीर्ण छात्र को हिन्दी डिप्लोम के समकक्ष मानकर, बी०ए पार्ट टाइम में प्रवेश मिल जाता है ।

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

आज हिन्दू परिवारों के लगभग सभी छात्र कक्षा छह तक हिन्दी विषय का अध्ययन करते हैं। इनमें कुछ गैर हिन्दू छात्र भी अब हिन्दी भाषा को सीखने में रुचि लेने लगे हैं। कक्षा 7 – 9 तक भी अधिकतर ये छात्र हिन्दी विषय को ही लेना पसंद करते हैं। कैंब्रिज से एस०सी, तथा एच०एस०सी की परीक्षाओं में भी हिन्दी विषय हैं, पर अन्य विषयों में अधिक रुचि तथा ये विषय व्यावसायोन्मुखी अधिक हैं। इस कारण हिन्दी पढ़ने वाले छात्रों की संख्या में कमी आ जाती है। आज भी बी०ए ऑनर्ज़ हिन्दी में 35-40 छात्र प्रवेश लेते हैं।

इस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए मॉरीशस के हिन्दी प्रेमियों, भारतीय संस्कृति के उपासकों को काफ़ी संघर्ष करने पड़े। आज भी अपनी भाषा तथा अस्मिता के लिए, वे अनवरत संघर्षरत हैं।

मॉरीशस एक ऐसा टापू है, जो चारों ओर समुद्र से घिरा है। यह देश विभिन्न जातियों भाषाओं, धर्म तथा संस्कृति के वैविध्य के लिए प्रसिद्ध है। मॉरीशस 12 मार्च सन् 1968 को अंग्रेज़ों के शासन से स्वतंत्र हुआ।

सन् 1810 में अंग्रेज़ों ने इस टापू पर अपना स्वत्वाधिकार कर लिया था। इनसे पूर्व फ्रेंच और डच यहाँ पर शासन करते थे। इस टापू पर माडागास्कर से गुलामों को लाकर कार्य करवाए जाते थे। सन् 1834 में मॉरीशस में भी गुलामी प्रथा का अंत हुआ। गुलामों ने खेतों में कार्य करने से इन्कार कर दिया। ऐसे में अंग्रेज़ों का ध्यान (जो उस समय भारत के भी शासक थे) भारतीय किसानों की ओर गया। इस टापू पर गन्ने की खेती के लिए भारतीय मज़दूरों को लाने के लिए शर्तबंदी प्रथा के तरीके का उपयोग किया गया। इस शर्तबंदी के अंतर्गत भारत के बिहार तथा उत्तर-प्रदेश के आस-पास के ज़िलों से गरीब-अनपढ़ मज़दूरों को 5 वर्ष के एग्रीमेंट के अन्तरगत मॉरीशस टापू पर बहला-फुसला कर लाया गया। समुद्र की कष्टदायी यात्रा को तय कर, ये मॉरीशस पहुँचते थे। तब इन्हें कोठी मालिकों के हवाले किया जाता था। ये भारतीय गिरमिटिया मज़दूर अपने साथ अपनी भोजपुरी बोली तथा कुछ धार्मिक ग्रंथ आदि भी लाए थे। लोकगीत, मानस की चौपाइयाँ, कबीर भजन आदि उनकी ताकत थे। दिन भर के कठोर परिश्रम के बाद संध्या समय बैठकाओं में ये गिरमिटिया मज़दूर बिरहा, भजन, मानस चौपाइयों आदि का गान कर, अपना सुख-दुख भुला पाते थे।

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

सन् 1834 से 1901 तक का समय इन गिरमिटिया मज़दूरों के जागरण का काल नहीं था । गांधीजी अफ़्रीका से वापिस भारत की ओर लौटते हुए, 1901 में मॉरीशस में कुछ दिनों के लिए रुके । इस दिनों में हुए संवादों के माध्यम से ही वे इन गिरमिटियों की दुर्दशा को समझ गए । सन् 1907 में गांधी जी ने बैरिस्टर मणिलाल डॉ० को मॉरीशस भेजा । मणिलाल डॉ० ने 15 मार्च 1909 को हिंदुस्तानी समाचार पत्र निकाला । यह पत्र उन भारतीयों की आवाज़ बना । यह पत्र हिन्दी तथा अंग्रेज़ी में था ।

सन् 1910 में मणिलाल डॉ० ने मॉरीशस में आर्य समाज की भी स्थापना की । मॉरीशस में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में आर्य सभा ने अतुलनीय योगदान दिया । पं० आत्माराम ने सन् 1921 में हिन्दी में 'मॉरीशस का इतिहास' तथा हिन्दू मॉरीशस' (1936) जैसी पुस्तकों का सृजन किया । इन पुस्तकों ने भारतवंशियों का मार्गदर्शन किया । इन्होंने हिन्दी में अन्य कई पुस्तकें भी लिखीं । उस समय में भारतीय गिरमिटिया मज़दूर अपने बच्चों के लिए जो सोचते थे पं० जी लिखते हैं –

'वह कमाई छोड़ कर छोकरे को पाठशाला में भेजना, पाँच छह साल तक उसके लिए कपड़ा लत्ता, खाना-पीना तथा पुस्तकें आदि में खर्च करना । यह सब कुली की नज़र में फिज़ूल बात हैं।' (पृ० २९३)

'इसके सिवाय कुलियों को यह भी डर रहता था कि अंग्रेज़ी पढ़ने से छोकरा ज़रूर ही बिगड़ जाएगा और ईसाई बन जाएगा ।'(पृ० २९४)

सन् 1878 में गवर्नर फ़ायरे तथा सन् 1885 में अंग्रेज़ गवर्नर हिंग्गिसन के प्रयासों से टापू के 5 स्कूलों में पूर्वीय भाषाओं का प्रयोग शुरू किया गया । ये दोनों गवर्नर कुलियों का हित भी सोचते थे । सन् 1935 तक कई महानुभावों के सफलप्रयासों के से लगभग 48 सरकारी एवं सरकार समर्थित पाठशालाओं में भारतीय भाषाएँ छात्र पढ़ने लगे थे । 1947 में पूर्वी भाषाओं के साथ-साथ फ्रेंच, अंग्रेज़ी आदि में साक्षरता की जागरूकता ने आंदोलन का रूप लेना शुरू किया । 1948-1949 में भारतीय भाषाओं का लिए संघर्ष बढ़ा।स्वतंत्रता से पूर्व तथा बाद में भी पूर्वी भाषाओं जिसमें हिन्दी भी थी, इन भाषाओं को महत्व नहीं दिया गया। हिन्दी विषय को

मॉरीशसीय प्राइमरी शिक्षण में यूरोपियन भाषाओं यथा फ्रेंच तथा अंग्रेज़ी के बराबर नहीं रखा गया।

हिन्दी विषय को अन्य विषयों के समान पूरा अधिकार तथा समकक्षता मिले इसके लिए गवर्नमेंट टीचर्स यूनियन, मॉरीशस ने (GTU) मॉरीशसीय सर्वोच्च अदालत को चुनौती देकर 1994 में इंगलेंड में प्रिवी कौंसिल तक लड़ाई लड़ी तथा उनकी जीत ने मॉरीशस में हिन्दी विषय को मुख्य विषयों के समकक्ष बना दिया। अब हिन्दी पढ़ने के लिए छात्र विशेष रूप से प्रेरित होने लगे।

मॉरीशस में हिन्दी में छात्रों को पढ़ाने के लिए प्राइमरी ऐज्यूकेटर, सैकेंड्री ऐज्यूकेटर तथा हिन्दी प्रवक्ताओं भी आवश्यकता बनी ही रहती है। इनके लिए प्रशिक्षण-कोर्स मॉरीशस इंस्टीट्यूट ऑफ मॉरीशस (MIE) तथा महात्मा गांधी संस्थान के मिले जुले सहयोग से चलते हैं। ये कोर्स हैं – टीचर्स डिप्लोमा प्रोग्राम (TDP) पोस्ट ग्रेज्यूएट सर्टिफ़िकेट इन एज्यूकेशन (PGCE)

तृतीयक स्तर या विश्वविद्यालय स्तर पर आज हिन्दी विभाग के सभी अध्यापक पी०एच०डी हैं। प्रत्येक वर्ष इनके छात्रों के कार्यों का मूल्यांकन करने के लिए भारत से भाषा विशेषज्ञ भी आते हैं, जिनका चयन मॉरीशस युनिवर्सिटी करती है।

मॉरीशस में हिन्दी के प्रचार प्रसार में अनेक संस्थाओं का अतुलनीय योगदान रहा है यथा - आर्य सभा, हिन्दी प्रचारिणी सभा, आर्य रविवेद सभा, देश के सभी सरकारी स्कूल (4146 स्कूल) सैकेंड्री कॉलेज तथा मॉरीशस विश्वविद्यालय के अंतर्गत महात्मा गांधी संस्थान।

हिन्दी के प्रसार में मीडिया का योगदान भी उपेक्षित नहीं किया जा सकता। चौबीस घंटे हिन्दी गानों का प्रसारण, टीवी पर फ़िल्मों, धारावाहिक आदि आज गैर हिन्दी भाषी भी देखना तथा सुनना पसंद करते हैं, तब वे हिन्दी सीखते हैं।

मॉरीशस का हिन्दू पंडित समाज वह चाहे आर्य समाजी हो या सनातनी, पूजा-पाठ, धार्मिक अनुष्ठान आदि सभी कार्य, हिन्दी तथा संस्कृत में ही करते हैं। विवाह-विधि भी वे संस्कृत के मंत्रों के साथ हिन्दी में ही सम्पन्न करवाते हैं।

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

मॉरीशस में हिन्दी लेखकों की भी एक समृद्ध परंपरा है – अनत, सोमदत्त बखोरी, चिंतामणि, सीबोरत, महेश रामजियावन, पूजानन्द नेमा, बृजमोहन, भानुमती नागदान, कल्पना लालजी, सुरीति रघुनंदन, धनराज शंभु, प्रह्लाद रामशरण आदि।

अंततः कह सकते हैं कि हिन्दी की डगर है तो कठिन, पर मॉरीशस वासियों ने हिन्दी को अपने हृदय में स्थान दे रखा है। आज भी मॉरीशस का हिन्दू अपनी हिन्दी को एक विरासत के रूप में, अपनी आने वाली पीढ़ी को देकर जाने की चाह रखता है और उसके लिए वह प्रयास तो करता है, पर दुःख इस बात का है कि घरों में भोजपुरी तथा हिन्दी के स्थान पर बोलचाल की भाषा क्रियोल बोली ने ले ली है। आज मॉरीशस की संपर्क भाषा क्रियोल है, राजभाषा अंग्रेज़ी तथा फ्रेंच हैं संस्कार की भाषा हिन्दी है। इसलिए हिन्दी आपको मॉरीशस की जनता की भाषा के रूप में सुनाई नहीं देती।